प्रमुख स्तंभ शिलालेख:

- **सारनाथ में स्थित सिंह चतुर्मुख:** अशोक द्वारा वाराणसी के पास धम्म चक्रप्रवर्तन या बुद्ध के पहले उपदेश की स्मृति में बनवाया गया था।
- वैशाली स्तंभ, बिहार, जिसमें एक सिंह बना हुआ है और कोई भी शिलालेख अंकित नहीं है।
- **संकिसा** स्तंभ, उत्तर प्रदेश
- **लौरिया नंदनगढ़, चंपारण, बिहार।**
- **लउरिया अरेराज, चंपारण, बिहार**
- इलाहाबाद स्तंभ, उत्तर प्रदेश।

स्तूप वास्तुकला

विचार योग्य प्रश्न: स्तूप क्या है? स्तूप क्यों निर्मित किए जाते हैं? यह वैदिक काल से किस प्रकार भिन्न है?

स्तूप:

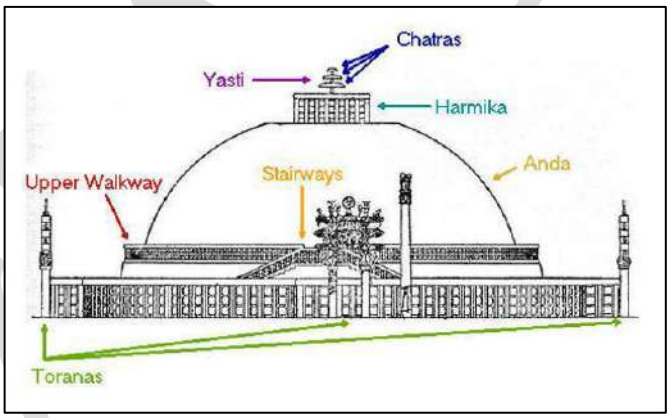

- स्तूप वैदिक काल से भारत में प्रचलित शवाधान टीले थे।
- स्तूप की अवधारणा वैदिक काल में शुरू हुई।
- यह अन्त्येष्टि मेघपुंज(funeral cumulus) की एक पारंपरिक विधि है, जिसमें मृतकों की राख व अवशेष को रखा जाता था।
- यह एक अर्ध गोलाकार गुंबद के आकार की बौद्ध स्मारक है जिसके अंदर बौद्ध के अवशेष और राख रखें गए है।
- बुद्ध की मृत्यु के बाद मूल रूप से 9 बुद्ध स्तूप बनाए गए थे जिसमें से आठ में उनकी मेधी में बुद्ध के अवशेष थे और नौवें स्तूप में उस पात्र को रखा गया जिसमें उनके अवशेषों को एकत्रित किया गया था ।
- सम्राट अशोक ने अपने साम्राज्य में कुल 84,000 से अधिक स्तूपों का निर्माण कराया।
- यदि बांस अथवा लकड़ी की दीवार जैसी दिखने वाली पत्थर की रेलिंग और स्तूप के चार प्रमुख बिंदुओं पर स्थापित घने नक्काशी दार प्रवेश द्वारों को छोड़ दिया जाए तो सांची और भरहुत में बने प्रारंभिक स्तूप साधारण आकार के थे। उपासक टीले के चारों ओर प्रदक्षिणा-पथ पर दक्षिणावर्त दिशा में परिक्रमा करते समय टीले को दाएं ओर रखते हुए छत पर लगाते थे।
- आधुनिक स्तूपो में एक परिक्रमा पथ होता था जो चारों ओर से पत्थर की रेलिंग द्वारा घिरा होता था, दो सीढ़ियां उस परिक्रमा पथ तक आती थी साथ ही स्तूप के ऊपर एक शीर्ष होता था जिसके ऊपर एक पत्थर की छत्र होता था।
- पूरी संरचना चारों तरफ से पत्थर की रेलिंग और आकृतियों के नक्काशीदार द्वारों से गिरी हुई थी। रेलिंग और प्रवेश द्वारों पर मूर्तिकला की भी नक्काशी की गई थी। उदाहरण सांची-द्वितीय, भरहुत, नागार्जुनकोंडा, अमरावती के स्तूप आदि।
- पहले के स्तूपों में एक ठोस कोर हुआ करता था। नए स्तूपों में बदलाव यह हुआ कि अब केंद्र में ईंटों से बना हुआ एक स्पोक व्हील(तीलीदार चक्र) होता था एवं अन्य खाली स्थान को मिट्टी से भर दिया जाता था। स्पोक व्हील(तीलीदार चक्र) ,बुद्ध के पहले उपदेश का प्रतीक है। भट्टीप्रोलु स्तूप (200 ईसा पूर्व) मध्यवर्ती दौर का है जिसमें केंद्र में पहिया तो है परंतु बीच में तीलिया नहीं बनी हुई है।
- आंध्र प्रदेश के स्तूपों में बने ऊंचे चबूतरे के चार बिंदुओं पर मुक्त रूप से खड़े 5 स्तंभ पाए गए यह बुद्ध के जीवन की पांच महत्वपूर्ण घटनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं - जन्म, त्याग, ज्ञान, प्रथम उपदेश, मृत्यु।
- मथुरा के कंकाली में जैन स्तूप भी स्थित है जिसे देव निर्मित स्तूप कहा जाता है।